International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 10 Issue 5, September-October, 2022, Impact Factor: 7.326

# पर्यावरण शिक्षा के प्रति बी.एड. प्रशिक्षुओं की मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

Dr. Nikki Kumari

Maitreya College of Education and Management, Hajipur

**सार**

*पर्यावरण शिक्षा का मूल उद्देश्य मानव-पर्यावरण के अंतर्संबंधों की व्याख्या करना तथा उन संपूर्ण घटकों का विवेचन करना है जो पृथ्वी पर जीवन को परिचालित करते हैं इसमें मात्र मानव जीवन ही नहीं अपितु जीव-जंतु एवं वनस्पति भी सम्मिलित हैं ।मानव , तकनीकी विकास एवं पर्यावरण के अंतर्संबंधों से जो पारिस्थितिकी चक्र बनता है और वह संपूर्ण क्रिया-कलापों और विकास को नियंत्रित करता है । यदि इनमें संतुलन रहता है तो सब कुछ सामान्य गति से चलता रहता है, किंतु किसी कारण से यदि इनमें व्यतिक्रम आता है तो पर्यावरण का स्वरूप विकृत होने लगता है और उसका हानिकारक प्रभाव न केवल जीव जगत् अपितु पर्यावरण के घटकों पर भी होता है ।वर्तमान में यह क्रम तीव्रता से हो रहा है । औद्योगिक तकनीकी , वैज्ञानिक, परिवहन विकास की होड़ में हम यह भूल गये थे कि ये साधन पर्यावरण को प्रदूषित कर मानव जाति एवं अन्य जीवों के लिये संकट का कारण बन जायेंगे । कुछ समय विचार-विनिमय में बीतता गया , तर्क-वितर्क चलता रहा तथा पर्यावरण अवकर्षण में वृद्धि होती गई ।इसी के साथ 'पर्यावरण शिक्षा' का विचार भी बल पकड़ने लगा, क्योंकि इससे पूर्व पर्यावरण का विभिन्न विषयों में भिन्न-भिन्न परिवेशों में अध्ययन किया जाता था । अब यह सभी स्वीकार करते हैं कि पर्यावरण को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिये जिससे छात्रों में प्रारंभिक काल से ही पर्यावरण चेतना जागृत की जा सके ।*

**मूल शब्द : पर्यावरण शिक्षा, मनोवृत्ति, प्रशिक्षु आदि**

## प्रस्तावना

पर्यावरण शिक्षा उस विशिष्ट शिक्षा को कहते है जो जन-समुदाय को पर्यावरण जानकारियों से परिचित कराकर पर्यावरण बोध को पुष्ट करती है , पर्यावरण कठिनाइयों के कारण और निवारण का मार्ग ढूँढती है तथा भविष्य की कठिनाइयों से आगाह कर जीवन को निरापद बनाने का मार्ग प्रशस्त करती है। पर्यावरणीय शिक्षा मानव की पर्यावरण जन्य चेतना को जागृत कर मानवीय आचरण को संतुलित बनाती है।

पर्यावरण शिक्षा को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि पर्यावरण शिक्षा वस्तुत: विश्व समुदाय को पर्यावरण सम्बन्धी दी जाने वाली वह शिक्षा है जिससे समस्याओं से अवगत होकर उनका समाधान ढूँढने और भविष्य में उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों की रोकथाम के लिये आवश्यक जानकारी प्राप्त होती है , जिसके आधार पर व्यक्तिगत या सामूहिक स्तर पर पर्यावरण समस्याओं से निजात पाने का मार्ग ढूँढा जा सकता है और भविष्य की कठिनाइयों को जाना जा सकता है।

## पर्यावरण शिक्षा का अर्थ

पर्यावरण शिक्षा का सरल अर्थ वह शिक्षा है, जो हमें अपने संरक्षण ,गुणवत्ता, संवर्द्धन और सुधार की व्याख्या करती है। मनुष्य प्रकृति से सीखे , प्रकृति के अनुसार अपने आपको ढाले और प्रकृति को प्रदूषित करने के बजाए उसका संरक्षण करें। यही संचेतना हमें पर्यावरण शिक्षा से मिलती है। पर्यावरण शिक्षा वास्तव में मानव द्वारा प्रकृति के प्रति अत्याचारों की शिक्षा का बोध करती है और भविष्य में सावधान रहने के लिए मानव को तैयार करती है। पर्यावरण शिक्षा पर्यावरण प्रबन्धन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है।

इसमें पर्यावरण के विभिन्न पक्षों व धटकों का मानव के साथ अन्तर्सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है। इसमें जीवमण्डलीय पारिस्थितिक तन्त्र को प्रभावित करने वाले घटकों की भी जानकारी मिलती है।

पर्यावरण शिक्षा को एक निश्चित परिभाषा के दायरे में बाँधना बड़ा कठिन है।

## पर्यावरण शिक्षा की परिभाषा

चैरमैन टेलर के अनुसार- "पर्यावरण शिक्षा को सद्रागरिकता का विकास करती है। और इससे अध्येता में पर्यावरण के संबंध में लापकारी, प्रेरणा और उत्तरदायित्व के भाव आते है।"

एनसाइक्लोपीडिया ऑफ एज्यूकेशन रिसर्च के अनुसार - शिक्षा का कार्य व्यक्ति का पर्यावरण से इस सीमा तक सामंजस्य स्थापित करना होता है, जिससे व्यक्ति और समाज को स्थायी संतोष मिल सके।"

बेसिंग महोदय के अनुसार - "पर्यावरण शिक्षा की परिभाषा देना सरल कार्य नहीं है। पर्यावरण शिक्षा के विषय क्षेत्र अन्य पाठ्यक्रमों की तुलना में कम परिभाषित है। फिर भी वह सर्वमान्य है कि पर्यावरण शिक्षा बहुविषयी होनी चाहिए, जिसमें जैविक , सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और मानवीय संसाधनों से सामग्री प्राप्त होती है। इस शिक्षा के लिए सम्प्रत्यात्मक विधि सर्वोत्तम है।"

## पर्यावरण शिक्षा के प्रकार

**1. औपचारिक पर्यावरण शिक्षा -** औपचारिक पर्यावरण शिक्षा और प्रशिक्षण के पात्र छात्र-छात्राएं , कार्यरत कर्मचारी, प्रशासनिक अधिकारी और पर्यावरण के प्रति अभिरूचि रखने वाले पढ़े-लिखे लोग होते हैं।

**2. अनौपचारिक पर्यावरण शिक्षा -** अनौपचरिक पर्यावरणीय शिक्षा मुख्यत: अनपढ़ लोगों को प्रदान की जाती है। ऐसे लोगों की अतिरिक्त कम पढ़े-लिखे और काम-धन्धों में लगे लोगों को भी ऐसी शिक्षा की आवश्यकता होती है। ऐसे वर्ग के लोगों के लिये विषेश व्यवस्था की आवश्यकता होती है , क्योंकि अनपढ़ होने के कारण इन्हें ऐसे तरीकों से शिक्षित किया जाता है, ताकि वे पर्यावरण के विविध पक्षों को समझ सकें।

## पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता

पर्यावरण संकट व समस्याओं की व्यापकता व विस्तार से ग्रस्त व भयभीत सम्पूर्ण मानवता को बचाने , उसकी रक्षा करने , व भविष्य को सुखी बनाने हेतु पर्यावरण शिक्षा आज की प्राथमिक आवश्यकता है। यदि इस शिक्षा की उपेक्षा कर दी जाये तो जन -जन में पर्यावरण अवबोध व गुणवत्ता बनाये रखने की चेतना जागृत नहीं होगी और पर्यावरण व पारिस्थितिक का असन्तुलन निरन्तर बढ़ता जायेगा जिससे ओजोन परत पर छिद्र बडा होने से सूर्य की पराबैगनी किरणें पृथ्वी पर सीधी पड़ने लगेगी ,मृदा की उर्वरक धारण शक्ति कम हो जाने से उपज न होगी। पीने के लिए शुद्ध जल नहीं मिलेगा और तापीय प्रदूषण उम्पन्न होने तथा कल- कारखाने व अन्य साधनों से इतना अधिक शोर होगा कि कान फटने लगेंगे। संक्षेप में मानव अपंग व अशक्त हो जायेगा। अत: इन समस्त संकटों व समस्याओं से बचने के लिए तथा मानव का सुरक्षित रखने के लिए पर्यावरण शिक्षा अत्यंत आवश्यक है।

**उद्देश्य**

1. लिंग के आधार पर बी.एड.प्रशिक्षुओं का पर्यावरण शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति का अध्ययन करना |
2. विषय के आधार पर बी.एड. प्रशिक्षुओं का का पर्यावरण शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति का अध्ययन करना |

**परिकल्पनाएँ**

1. लिंग के आधार परबी.एड. प्रशिक्षुओं का पर्यावरण शिक्षा के प्रति मनोवृत्तिमें कोई सार्थक अंतर नही है |
2. विषय के आधार पर बी.एड.प्रशिक्षुओं का पर्यावरण शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नही है |

**साहित्यकिसमीक्षा**

- **गिकुकी, नडुंगी डेनियल (2007)** (प्राप्त की-11-10-2013) ने इतिहास अध्ययन के प्रति छात्रों की मनोवृत्ति और मिरिंगा मीरू वर्ग के कुछ चयनित सरकारी माध्यमिक विद्यालय का समीक्षात्मक अध्ययन किया | नैरोबी विश्वविद्यालय |

अध्ययन का उद्देश्य
केन्या के जनतान्त्रिक पूर्वी राज्य में इमेंती उत्तरी जिला के मिरिंगा मिरू के कुछ चयनित माध्यमिक विद्यालय और इतिहास अध्ययन के प्रति छात्रों की मनोवृत्ति का पता लगाना |

अध्ययन का परिणाम
सरकारी विद्यालय और इतिहास के प्रति छात्रों की मनोवृत्ति को शिक्षण विधि, शिक्षक का व्यवहार, घटना, याद करने की विधि और पदों की उपस्थिति स्तर ने प्रभावित किया |

- **इलियट,(2003)**ने"Attitudes towards Education for Global Citizen among teachers" पर शोध किया |

अध्ययन का उद्देश्य

- विश्व स्तर पर शिक्षकों में शिक्षा के प्रति उनकी मनोवृत्ति का पता लगाना |
- शिक्षकों में शिक्षा के प्रति उनकी मनोवृत्ति की जाँच करना, जो स्तरीय नागरिक को बढ़ता है |
- विश्व स्तर पर नागरिकता को बढ़ाने में शिक्षा के प्रति शिक्षकों में उनकी मनोवृत्ति का पता लगाना एवं जो उपयोगी मनोवृत्ति जो सार्वजनिक है, को उजागर करना |
- विश्व स्तर पर नागरिकता को बढ़ाने में शिक्षा के प्रति शिक्षकों में उनकी मनोवृत्ति का पता लगाना |

अध्ययन के निष्कर्ष

- महिला शिक्षिकाओं में यह मनोवृत्ति ज्यादा सकारात्मक पायी गईं |
- शिक्षा के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति पुरुष शिक्षको में पायी गयी लेकिन विश्व स्तर पर नागरिकता को बढ़ाने वाली मनोवृत्ति नही पाई गईं |
- शिक्षकों में शिक्षा के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति देखी गई लेकिन विश्वस्तरीय नागरिकता को बढ़ाने वाली मनोवृत्ति नही पायी गई |

**शोध विधि**

शोधकत्री ने इस कार्य के लिए बी.एड. प्रशिक्षुओं का पर्यावरण के प्रति जागरूकता की वर्तमान स्थिति का पता लगाने के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है |

**अध्ययन का क्षेत्र**

प्रस्तुत शोध वैशाली (बिहार) में प्रायोजित किया गया है | इस शोध में समष्टि के रूप में वैशाली के बी.एड.कॉलेजों के प्रशिक्षुओं का चयन किया गया है |

**जनसंख्या या समष्टि**

इस अध्ययन में वैशाली के बी.एड.कॉलेजों के प्रशिक्षुओं को शामिल किया गया है |

**प्रतिदर्श**

प्रतिदर्श के अंतर्गत छः बी.एड. कॉलेजों को शामिल किया गया है |

**प्रदत्त विश्लेषण**

**परिकल्पनाओ का परीक्षण**

**परिकल्पना 1 :** लिंग के आधार पर बी.एड. प्रशिक्षुओं का पर्यावरण शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नही है |

**लिंग के आधार पर बी.एड. प्रशिक्षुओं का पर्यावरण शिक्षा के प्रति मनोवृत्तिका टी-मूल्य**

| लिंग | संख्या | माध्य | मानक-विचलन | टी-मूल्य | अभियुक्ति |
|---|---|---|---|---|---|
| छात्र (1) | 40 | 114.67 | 10.31 | 1.19 | सार्थक नही |
| छात्रा (2) | 37 | 111.40 | 10.31 | | |

(0.05 सार्थकतास्तरकेआधारपर 'टी' मूल्यकामान 1.98 है |)

उपर्युक्ततालिकाकोदेखनेसेस्पष्टहोताहैकिशोधार्थी द्वारा प्राप्त मान 1.19है जो मान्यकृत तालिका टी मान (1.98) से कम है | अतः नल परिकल्पना स्वीकृत की जाती है | अर्थात लिंग लिंग के आधार पर बी.एड. प्रशिक्षुओं कापर्यावरण शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति में सार्थक अंतर नही है |

**परिकल्पना 2:** विषय के आधार पर बी.एड. प्रशिक्षुओं का पर्यावरण शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नही है

**विषयके आधार पर बी.एडप्रशिक्षुओं का पर्यावरण शिक्षा के प्रति मनोवृत्तिकाटी-मूल्य**

| **विषय** | संख्या | माध्य | मानक-विचलन | टी-मूल्य | अभियुक्ति |
|---|---|---|---|---|---|
| कला (1) | 55 | 111.87 | 11.36 | 1.06 | सार्थक नही |
| विज्ञान (2) | 22 | 112.19 | 11.35 | | |

(0.05 सार्थकता स्तर के आधार पर 'टी' मूल्य का मान 1.98 है |)

उपर्युक्त तालिका को देखने से स्पष्ट होता है कि शोधार्थी द्वारा प्राप्त मान 1.06 है जो मान्यकृत तालिका टी मान (1.98) से कम है | अतः नल परिकल्पना स्वीकृत की जाती है | अर्थात विषय के आधार पर बी.एड. प्रशिक्षुओं का पर्यावरण शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति में सार्थक अंतर है |

## निष्कर्ष :-

यह अध्ययन विषय के आधार पर बी.एड. प्रशिक्षुओं का पर्यावरण शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति से सम्बन्धित है | शोधार्थी ने अपने शोध से सम्बन्धित सांख्यिकी परीक्षणों के परिणाम एवं व्याख्या के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त किया की विषय के आधार पर बी.एड. प्रशिक्षुओं का पर्यावरण शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति पर लिंग तथा विषय के आधार पर कोई सार्थक प्रभाव नही पड़ता है |

## सन्दर्भ सूची :-

[1]. अग्रवाल.पी.के. 'पर्यावरण एवं नदी प्रदूषण' आशीष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली 1993 .

[2]. गोपाल सिंह. 'पर्यावरण शिक्षा' लायल बुक डिपो, मेरठ 1997 .

[3]. रेड्डी. डिम्पल.एवं तिवारी संजीत. पी.एच.डी. शोधकर्ता, (2017) " *रायपुर जिले के उच्चतर अध्यिमक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन* ". मैट्स यूनिवर्सिटी. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एडवांस एजुकेशन एंड रिसर्च. वोल्यूम 2. इसु 2. पेज न. 23-25.

[4]. एम. गौरव . शीतल . एम. कृष्णाराव. ( 2015 ). "*शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 के प्रति शिक्षकों की जागरूकता का अध्ययन*". www.shodhganga.com

[5]. गिकुकी,नडुंगीडेनियल(2007)(प्राप्तकी-11-10-2013)नेइतिहासअध्ययनकेप्रतिछात्रोंकीमनोवृत्तिऔरमिरिंगामीरूवर्गकेकुछचयनितसरकारीमाध्यमिकविद्यालयकासमीक्षात्मकअध्ययनकिया|नैरोबीविश्वविद्याल

[6]. इलियट, (2003) ने"AttitudestowardsEducationforGlobalCitizenamongteachers"परशोधकिया